C→4 (Language Across the curriculum)

भाषा शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य :— (Aims and objectives of language Teaching)

भूमिका :— भाषा समाज को विधाता की ओर से सबसे बड़ा वरदान है। यदि सोचा जाए तो हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं कि भाषा के बिना मनुष्य की स्थिति कितनी शोचनीय होगी। भाषा समाज, जाति अथवा राष्ट्र की उन्नति का आधार है। किसी भी भाषा का महत्व उसके साहित्य से लगाया जा सकता है। भारतीय समाज कितना उच्च था कितना प्रगतिशील था, इसका अनुमान उसके उपलब्ध साहित्य से लगाया जा सकता है। जिस भाषा का साहित्य जितना अधिक समृद्ध होता है, उसके विचारों की श्रेष्ठता को भला कौन नहीं स्वीकार करेगा।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है अर्थात् सामाजिक जीवन का प्रतिबिम्ब हमें साहित्य में उपलब्ध होता है, भाषा के द्वारा ही हम इनका आकलन कर सकते हैं। बिना भाषा के माध्यम के हम इतने सुन्दर तथा उच्च कोटि के साहित्य का सृजन करने में समर्थ नहीं हो सकते हैं।

उन सभी बातों के के आधार पर हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय जीवन में भाषा का महत्व कितना अधिक है।

भाषा शिक्षण के लक्ष्य (Aims of language Teaching) :—

1. भाषा शिक्षण का मुख्य लक्ष्य भाषा को भली प्रकार पढ़ने की योग्यता का विकास होना है।

Scanned with CamScanner

2. भाषा शिक्षण का लक्ष्य भाषा को समझने की बोधगम्यता का विकास होना है।

3. भाषा शिक्षण का लक्ष्य लेखन के कौशलों का विकास होना है।

4. भाषा शिक्षण का लक्ष्य व्याकरण के नियमों की पूर्ण जानकारी प्राप्त होना है।

5. भाषा शिक्षण का लक्ष्य भाषा सम्बन्धी शब्दावली की पूर्ण जानकारी होना है।

भाषा शिक्षण के उद्देश्य :→ मनोवैज्ञानिकों तथा भाषाशास्त्रियों ने भाषा शिक्षण के नीचे लिखे उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं :—

(1) प्राथमिक कक्षाएँ :→ प्राथमिक कक्षाओं के उद्देश्य निम्नलिखीत हैं :—

(i) बालकों को इस योग्य बनाना कि पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के आधार पर बोली गयी उच्चरित भाषा को भली-भाँति समझ सकें।

(ii) बालकों को इस योग्य बनाना कि पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के आधार पर भाषा को ठीक-ठीक बोल सकें। वे जिस वातावरण में रहते हैं उसको सामने रखते हुए, जहाँ तक बन सके उनका उच्चारण शुद्ध होना चाहिए।

(iii) उन्हे इस योग्य बनाना कि पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के आधार पर वे उचित प्रवाह के साथ सस्वर वाचन कर सकें।

(iv) बालकों में ऐसी क्षमता उत्पन्न करना कि वे उचित गति से उपर्युक्त पाठ्य-सामग्री का मौन वाचन करते हुए उसे ठीक-ठीक

Scanned with CamScanner

समझ सकें तथा उनसे इस सम्बन्ध में जो-जो प्रश्न पूछे जाएं, उन प्रश्नों का जैसा भी चाहिए वैसा उत्तर दे सकें।

(v) बालकों को इस योग्य बनाना कि वे पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के भीतर छोटे-छोटे वाक्य तथा अनुच्छेद बनाने में समर्थ हो सकें। यह आवश्यक नहीं कि इन वाक्यों तथा अनुच्छेदों को बनाते समय सम्बन्धित विषय भी वे स्वयं ही सोचें।

(2). माध्यमिक कक्षाएँ :→

(i) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे पाठ्यक्रम में निश्चित की गई शब्दावली के भीतर, सामान्य गति से बोली गई उच्चरित भाषा को स्पष्ट रूप से समझ सकें।

(ii) छात्रों में इतनी क्षमता उत्पन्न करना कि वे पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के आधार पर भाषा को ठीक-ठीक बोल सकें। जिस वातावरण में रहते हैं, उसको सामने रखते हुए जहाँ तक बन पाए, उनका उच्चारण शुद्ध होना चाहिए।

(iii) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के भीतर, अच्छी गति से सस्वर तथा मौन वाचन कर सकें। परन्तु इस बात की सावधानी रखी जाये कि पाठ्यक्रम के बाहर का अवतरण ऐसा न हो जिसके लिए विशेष योग्यता की आवश्यकता पड़े।

(iv) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे पाठ्यक्रम से बाहर किसी अपठित अवतरण को शब्दकोश की सहायता से पढ़ सकें।

Scanned with CamScanner

(v) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे शुद्ध हिन्दी में कोई साधारण पत्र लिख सकें अथवा किसी सरल विषय पर अपने विचार व्यक्त कर सकें।

(3) उच्च कक्षाएँ :—

(i) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे सामान्य गति से बोली गई भाषा को ठीक-ठीक समझ सकें।

(ii) छात्रों को इस योग्य बनाना कि उचित विराम-चिन्हों का प्रयोग करते हुए वे शुद्ध भाषा में वार्तालाप कर सकें। उनकी बोलचाल की भाषा में किसी भी प्रकार का उच्चारण सम्बन्धी दोष नहीं होना चाहिए।

(iii) छात्रों में यह क्षमता उत्पन्न करना कि वे उच्च स्तर पर सस्वर वाचन तथा मौन वाचन कर सकें।

(iv) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे वर्णनात्मक तथा सूचनात्मक सामग्री का संक्षेपीकरण कर सकें।

(v) छात्रों में इतनी योग्यता उत्पन्न करना कि वे पत्र लिख सकें, देखी हुई तथा सुनी हुई घटनाओं का विवरण दे सकें तथा किसी सामान्य विषय पर शुद्ध तथा सरल भाषा में अपने व्यक्तिगत विचार व्यक्त कर सकें।

Scanned with CamScanner

भाषा शिक्षण के अन्य उद्देश्य :—

कौशलों के विकास के दृष्टिकोण से भाषा शिक्षण के उद्देश्यों को पाँच वर्गों में बाँटा गया है :—

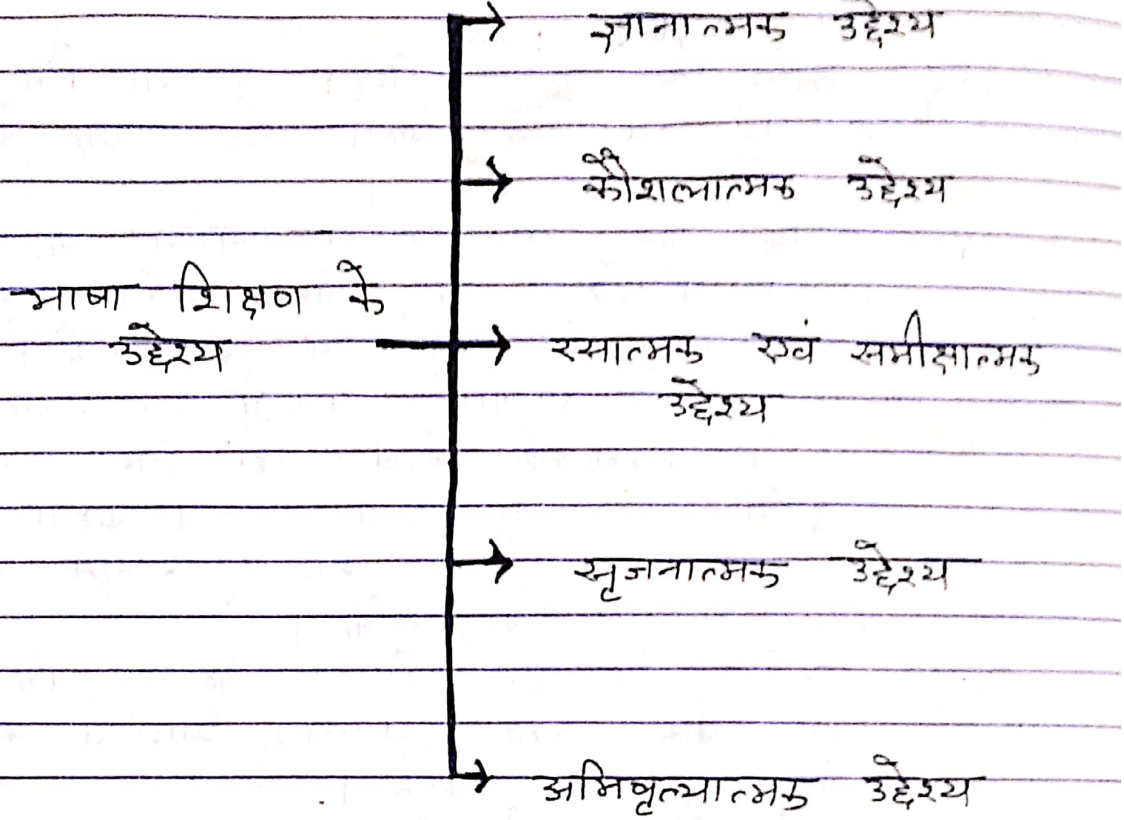

1. ज्ञानात्मक उद्देश्य :—

ज्ञानात्मक उद्देश्यों का तात्पर्य है — छात्रों को भाषा एवं साहित्य की कुछ बातों का ज्ञान देना। ज्ञानात्मक उद्देश्यों के अन्तर्गत निम्नलिखित बातें आती है।

(i) ध्वनि, शब्द एवं वाक्य-रचना का ज्ञान देना
(ii) उच्च माध्यमिक स्तर पर निबन्ध, कहानी, उपन्यास, नाटक, काव्य-गीत आदि साहित्य विधाओं का ज्ञान देना।
(iii) सांस्कृतिक, व्यवहारिक, सामाजिक एवं जीवनगत अनुभूतियों, गाथाओं, तथ्यों, घटनाओं आदि का ज्ञान देना तथा लेखक की जीवनगत, रचनागत विशेषताओं

Scanned with CamScanner

एवं समीक्षा सिद्धान्तों का उच्च माध्यमिक स्तर पर ज्ञान देना।

(iv) रचना - कार्य के मौखिक एवं लिखित रूपों का ज्ञान देना जिनमें वार्तालाप सस्वर वाचन, अन्त्याक्षरी, भाषण, वाद-विवाद, संवाद, साक्षात्कार, निबन्ध सारांशीकरण, कहानी, आत्मकथा, पत्र, तार आदि

(v) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्रों के भाषा साहित्य के इतिहास की रूप रेखा से भी परिचित कराना चाहिए।

ज्ञानात्मक उद्देश्यों के प्राप्ति के लिए छात्रों के व्यवहार में निम्नलिखित परिवर्तन होंगे :—

(i) छात्र इन्हें पहचान सकेगा।
(ii) छात्र इनके अशुद्ध रूपों में त्रुटियों पकड़ सकेगा।
(iii) वह इनके उदाहरण दे सकेगा।
(iv) वह इनकी तुलना कर सकेगा।
(v) वह इनका विश्लेषण कर सकेगा।
(vi) वह इनका संश्लेषण कर सकेगा।
(vii) वह इनका वर्गीकरण कर सकेगा।

2. कौशलात्मक उद्देश्य :—

कौशलात्मक उद्देश्यों का भाषायी कौशलों से होता है, जिनमें पढ़ना, लिखना, बोलना, अर्थ ग्रहण करना आदि सम्मिलित है कौशलात्मक उद्देश्यों के अन्तर्गत निम्नलिखित बातें आती हैं :—

(i) सुनकर अर्थ ग्रहण करना।
(ii) शुद्ध एवं स्पष्ट वाचन करना।
(iii) गद्य-पद्य पढ़कर अर्थ ग्रहण करना।
(iv) बोलकर भावाभिव्यक्ति करना।
(v) लिखकर भावाभिव्यक्ति करना।

Scanned with CamScanner

इस उद्देश्य के प्राप्ति के पश्चात छात्रों में यह परिवर्तन देखने को मिल सकेगा :—

1. धैर्यपूर्वक सुनना ।
2. सुनने के शिष्टाचार का पालन करना ।
3. मनोयोगपूर्वक सुनना ।
4. शब्दों, मुहावरों व उक्ति का प्रसंगानुकूल अर्थ व भाव समझ सकना ।
5. स्वराघात, बलाघात तथा स्वर के उतार चढ़ाव के अनुसार अर्थ ग्रहण कर सकना ।
6. श्रुत लेखन के विषय को जान सकना ।
7. महत्वपूर्ण विचारों, भावों एवं तथ्यों का चयन कर सकना ।
8. उनके बीच के परस्पर सम्बन्ध समझ सकना ।
9. सारांश ग्रहण कर सकना ।
10. अभिव्यक्ति के ढंग को समझ सकना ।

वार्तालाप, वाद-विवाद, प्रवचन, भाषण, आदेश निर्देश, कविता, आकाशवाणी, प्रसारण जैसी सामग्रियों को सुनकर उपयुक्त योग्यता का विकास किया जा सकता है ।

3. समीक्षात्मक उद्देश्य :—

इन उद्देश्यों के अन्तर्गत दो भाग हो सकते हैं :—

i) साहित्य का रसास्वादन
ii) साहित्य की सामान्य समालोचना

इन दोनों उद्देश्यों का सम्बन्ध उच्च कक्षाओं से है जिसका वर्णन पहले ही किया जा चुका है ।

4. सृजनात्मक उद्देश्य :—

सृजनात्मक उद्देश्य से तात्पर्य है — छात्रों को साहित्य सृजन की

Scanned with CamScanner

प्रेरणा देना, उनमें रचना में मौलिकता लाने की योग्यता का विकास करने के लिए प्रेरित करना। इस कार्य के लिए निबन्ध, कहानी, संवाद, पत्र उपन्यास एवं कविता को माध्यम बनाया जा सकता है। एवं इसके द्वारा छात्रों में निम्नलिखित परिवर्तन एवं योग्यताओं की अपेक्षा की जा सकती है :—

(i) वह विषय तथा उसके अन्तर्गत भावों एवं विचारों के लिए उपयुक्त साहित्य की विधा का चयन कर सकेगा।

2. वह स्वानुभूत भावों तथा विचारों को अभिव्यक्त कर सकेगा।

3. वह स्वानुभूत भावों तथा विचारों को प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त कर सकेगा।

4. वह गृहीत या स्वानुभूत विचारों को कल्पना की सहायता से नया रूप दे सकेगा।

5. वह विषय तथा प्रसंग के अनुकूल भाषा एवं शैली का उपयोग कर सकेगा।

5. अभिवृत्यात्मक उद्देश्य :—

इस उद्देश्य का तात्पर्य यह है कि छात्रों में भाषा शिक्षण के माध्यम से इस सम्बन्ध में दो उद्देश्यों की प्राप्ति होनी चाहिए :—

1. भाषा और साहित्य में रुचि
2. सद्वृत्तियों का विकास

भाषा और साहित्य में रुचि होने के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए छात्र में योग्यताओं में निम्नलिखित विकास आवश्यक है :—

1. पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य पुस्तकें पढ़ना

Scanned with CamScanner

2. कविताएँ कण्ठस्थ करना
3. कक्षा और विद्यालय की पत्रिका में योगदान देना।
4. विद्यालय से बाहर होने वाले साहित्यक कार्यक्रमों में भाग लेना।
5. साहित्यिकारों के चित्र एकत्रित करना।
6. साहित्यिक महत्व की पत्रिकाएँ एकत्रित करना।
7. अपना एक पुस्तकालय बनाना।
8. साहित्यिक संस्थाओं का सदस्य बनना।
9. अपने मित्रों तथा संसर्ग में आने वाले व्यक्तियों में भाषा और साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करने का प्रयास करना।

सद्वृत्तियों का विकास करने का अर्थ है - छात्रों में श्रद्धा, ब्रह्म, साहित्य-प्रेम, देश-प्रेम, मानव-प्रेम, सहृदयता एवं संवेदनशीलता का विकास करना।

Scanned with CamScanner